सप्तकाण्ड
रामायण

महापुरुष माधवदेव, अप्रमादी कवि माधव कंदलि और महापुरुष शंकरदेव द्वारा मूल असमीया भाषा में रचित

लिप्यंतरण एवं अनुवाद
डॉ॰ रीतामणि वैश्य

neglimpse.com

सप्तकाण्ड
रामायण
माधवदेव कृत आदिकाण्ड
श्रीकृष्णाय नमः

रामाय रामचंद्राय रामभद्राय बेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

मूल असमीया पाठ	हिन्दी अनुवाद
बंदना	वंदना
जय जय कृष्ण देव दैवकीनंदन।	जय जय कृष्ण देव दैवकीनन्दन।
ब्रह्मा हरे करे यार चरणे बंदन॥	ब्रह्मा हर करते हैं चरण वंदन॥
आति अंत्य जाति तरे यार लैले नाम।	अन्त्य जात का पार करे जिनका नाम।
हेन कृष्ण पदे करो सदाय प्रणाम॥1	वैसे कृष्णपदों का करता हूँ प्रणाम॥1
नमो नमो राम रघुकुलर कमल।	नमो नमो राम रघुकुल के कमल।
करियो प्रकाश निज यश सुनिर्म्मल॥	किया प्रकाशित निज यश सुनिर्मल॥
पूरिलाहा यिटो जगतर मनकाम।	पूर्ण की जगत की समस्त मनोकाम।
हेन रामपदे करो सदाय प्रणाम॥2	वैसे रामपदों को करता हूँ प्रणाम॥2
एके ब्रह्मा आसि चारि मूर्त्ति अवतरि।	एक ब्रह्मा हैं चार उनके अवतार।
हरिला भूमिर भार राक्षस संहरि॥	हरि भूमि का भार राक्षस का संहार॥
ब्रह्मा आदि देवर साधिला प्रयोजन।	ब्रह्मादि देवों का पूर्ण किया प्रयोजन।
प्रणामो सादरे हेन रामर चरण॥3	सादर प्रणाम करूँ वैसे राम चरण॥3
निज गुरु चरणत करि नमस्कार।	निज गुरु चरण करता नमस्कार।
रचिलो माधवे आद्यकांड कथा सार॥	रचा माधव ने आदिकाण्ड कथासार॥
आचरि मंगल गुण कीर्त्तन कृष्णर।	करता हूँ कृष्ण का सुमंगल कीर्तन।
कृष्णक स्मरणे सिद्धि हौक आरंभर॥4	शुभारंभ की सिद्धि मिले कृष्ण स्मरण॥4

बोलो कृतांजलि शुनासबे सभासद।	प्रणाम सबको करूँ सुनें सभासद।
महामूढ़ हुया करो रामायण पद॥	महा मूर्ख कर रहा रामायण पद॥
परम चंचल मइ अधमर दोष।	परम चंचल अधम का यह दोष।
क्षेमिवा सकले नकरिबा असंतोष॥5	क्षमा कर दें न करें आप असंतोष॥5
नाहिके कबिता गुण नुहिको पंडित।	नहीं हैं कवि के गुण न हूँ मैं पंडित।
तथापितो भैला पद करिबाक चित्त॥	फिर भी पद के लेखन का हुआ चित्त॥
महाभोग इच्छा येन भैला दरिद्रर।	महाभोग की इच्छा हुई अति दीन की।
मइ अज्ञानीर जाना सेहि पटंतर॥6	वही पटंतर है मैं हूँ अज्ञान मति॥6
जानि महाजने निंदा नकरिबा आत।	महान न करें निंदा यह मेरा काम।
करो हेरा मइ कृतांजलि प्रणिपात॥	कृतांजलि होकर करता हूँ प्रणाम॥
येइ सेइ बिके येन अमूल्य रतन।	कोई भी बिकता जैसे अमूल्य रतन।
ताक बाछि आछे जाना कोन महाजन॥7	उसे चुन रहा मानो कोई महाजन॥7
मोर पद पटंतर येन हीन जाति।	मेरे पद का पटंतर है हीन जाति।
रामर चरित्रचय महारत्न आति॥	राम का चरित्रचय महारत्न अति॥
मोर पद जानि दोष करा परिहार।	जान पद मेरे दोष करें परिहार।
लैयो राम गुणमय महारत्न सार॥8	लें गुणमय राम का महारत्न सार॥8
तेबेसे कलित हैबा कृतार्थ संप्रति।	तब ही कलि में होंगे कृतार्थ संप्रति।
रामकथा शुनि अनायासे पाइबा गति॥	रामकथा सुन सहज मिलेगी गति॥
उत्तम मनुष्य जन्म नकरियो बृथा।	उत्तम मनुष्य जनम न करें वृथा।
एकचित्त मने शुना रामायण कथा॥9	एकचित्त हो सुनिए रामायण कथा॥9
महाऋषि बाल्मीकिर निर्म्मल हृदय।	महाऋषि वाल्मीकि का निर्मल हृदय।
करिला लोकक महा कृपा कृपामय॥	किया लोगों पर महा कृपा कृपामय॥
रामकथा अमृतक करि महादान।	राम कथा अमृत का किया महादान।
साधिलंत जगतर परम कल्याण॥10	साधन किया जगत का अति कल्याण॥10